eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

परिवार संस्था का बदलता स्वरूप– संयुक्त से एकल परिवार की ओर

[1]डॉ0 शालिनी सोनी
[1]समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, बेहट (सहारनपुर) उ0प्र0

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

परिवार संस्था मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण एवं आधारभूत इकाई है, जो व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास में केंद्रीय भूमिका निभाती है। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रभुत्व रहा है, जिसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती थीं तथा संसाधनों, दायित्वों और संबंधों का सामूहिक निर्वहन होता था। किन्तु आधुनिक युग में तीव्र सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों जैसे नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा का प्रसार, वैश्वीकरण तथा महिला सशक्तिकरण ने परिवार संस्था के स्वरूप में व्यापक बदलाव उत्पन्न किए हैं। शोध–पत्र संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे संक्रमण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह पाया गया कि यह परिवर्तन केवल संरचनात्मक नहीं, बल्कि कार्यात्मक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी परिलक्षित होता है। एकल परिवारों के बढ़ते प्रचलन ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, गोपनीयता तथा निर्णय–क्षमता को बढ़ावा दिया है, जबकि दूसरी ओर सामाजिक सुरक्षा, पारिवारिक सहयोग और वृद्धों की देखभाल जैसी पारंपरिक विशेषताओं में कमी आई है। शोध यह भी इंगित करता है कि संयुक्त परिवार पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसने परिवर्तित रूप जैसे संशोधित संयुक्त परिवार, में स्वयं को अनुकूलित कर लिया है, जहाँ सदस्य भौगोलिक रूप से अलग रहते हुए भी भावनात्मक एवं आर्थिक रूप से जुड़े रहते हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि परिवार संस्था का बदलता स्वरूप आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है, जो भारतीय समाज में निरंतर विकसित हो रही है।

मुख्य शब्द – परिवार संस्था, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण, वैश्वीकरण

Introduction

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, सार्वभौमिक और आधारभूत सामाजिक संस्था है। यह न केवल व्यक्ति के जन्म और पालन–पोषण का केंद्र है, बल्कि उसके व्यक्तित्व निर्माण, समाजीकरण, नैतिक मूल्यों के विकास तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संवहन का प्रमुख माध्यम भी है। समाजशास्त्र में परिवार को वह प्राथमिक समूह माना गया है, जहाँ व्यक्ति पहली बार सामाजिक संबंधों, भूमिकाओं और दायित्वों का अनुभव करता है। इस प्रकार परिवार समाज की संरचना और स्थिरता का मूल आधार है। भारतीय समाज में परिवार का स्वरूप ऐतिहासिक रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित रहा है। इस व्यवस्था में अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती थीं और पारिवारिक जीवन सामूहिकता, सहयोग, त्याग तथा परस्पर निर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित होता था। संयुक्त परिवार केवल एक निवास इकाई नहीं था, बल्कि वह आर्थिक,

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र था, जहाँ संसाधनों का साझा उपयोग, सामूहिक निर्णय और पारिवारिक उत्तरदायित्वों का वितरण होता था।

किन्तु समय के साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने परिवार संस्था के स्वरूप को प्रभावित किया है। विशेष रूप से औद्योगिकीकरण और नगरीकरण के प्रभाव से रोजगार के अवसर शहरों में केंद्रित होने लगे, जिसके कारण लोगों का ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ा। इस प्रक्रिया ने संयुक्त परिवारों की संरचना को कमजोर किया और एकल परिवारों के उदय को प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त शिक्षा के प्रसार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तिवादी मूल्यों की वृद्धि, महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी तथा वैश्वीकरण जैसे कारकों ने भी पारंपरिक पारिवारिक संरचना में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक समय में एकल परिवारों की संख्या में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है, जहाँ केवल पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे ही परिवार के सदस्य होते हैं। इस प्रकार के परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता और जीवन–शैली में लचीलापन अधिक होता है, किंतु इसके साथ ही सामाजिक सुरक्षा, पारिवारिक सहयोग और भावनात्मक समर्थन में कमी जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

यह उल्लेखनीय है कि परिवार संस्था का यह परिवर्तन एक रैखिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता के बीच अंतःक्रिया देखने को मिलती है। आज के भारतीय समाज में न तो संयुक्त परिवार पूर्णतः समाप्त हुआ है और न ही एकल परिवार ही एकमात्र स्वरूप बन पाया है, बल्कि दोनों के बीच एक संक्रमणकालीन या संशोधित रूप विकसित हो रहा है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य परिवार संस्था के बदलते स्वरूप का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है, विशेष रूप से संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे परिवर्तन की प्रकृति, कारणों एवं प्रभावों को समझना। यह अध्ययन न केवल पारिवारिक संरचना के परिवर्तन को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि आधुनिक समाज में परिवार किस प्रकार अपनी प्रासंगिकता बनाए रखते हुए नए रूपों में विकसित हो रहा है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक पारंपरिक और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जिसका आधार सामूहिकता, सहयोग और पारस्परिक निर्भरता पर टिका होता है। यह केवल एक निवास व्यवस्था नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संगठन है, जिसमें एक ही वंश या कुल के अनेक सदस्यकृजैसे दादा–दादी, पिता–माता, चाचा–चाची, भाई–बहन तथा उनके बच्चे एक साथ रहते हैं और जीवन के विभिन्न पक्षों को साझा करते हैं।

संयुक्त परिवार की मूल विशेषता यह है कि इसमें संपत्ति, आय और संसाधनों का सामूहिक स्वामित्व होता है। परिवार के सभी सदस्य मिलकर आर्थिक गतिविधियों में भाग लेते हैं और उनकी आय एक साझा कोष में जमा होती है, जिससे पूरे परिवार का भरण–पोषण किया जाता है। इस प्रकार यह व्यवस्था आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है तथा संकट के समय सदस्यों को सहारा देती है।

इस प्रकार के परिवार में अधिकार और दायित्व का वितरण भी एक निश्चित ढाँचे के अंतर्गत होता है। सामान्यतः परिवार का सबसे वरिष्ठ सदस्य, जिसे 'कुलपति' या 'परिवार प्रमुख' कहा जाता है, निर्णय

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

लेने की प्रमुख भूमिका निभाता है। उसके निर्देशन में परिवार के अन्य सदस्य अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इस व्यवस्था में अनुशासन, परंपरा और सामाजिक मर्यादाओं का विशेष महत्व होता है।

संयुक्त परिवार का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका सांस्कृतिक और नैतिक योगदान है। इसमें बच्चों का पालन–पोषण केवल माता–पिता ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार द्वारा किया जाता है, जिससे उनमें सामूहिकता, सहनशीलता, सम्मान और सहयोग जैसे मूल्यों का विकास होता है। बुजुर्गों का अनुभव और मार्गदर्शन परिवार के अन्य सदस्यों के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार में श्रम का विभाजन भी स्पष्ट रूप से देखा जाता है। परिवार के विभिन्न सदस्य अपनी क्षमता और भूमिका के अनुसार कार्य करते हैं, जिससे कार्यों का बोझ संतुलित रहता है। उदाहरण के लिए, पुरुष सदस्य बाहरी कार्यों में संलग्न रहते हैं, जबकि महिलाएँ घरेलू कार्यों का संचालन करती हैं, हालांकि आधुनिक समय में यह विभाजन बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसमें बेरोजगारी, बीमारी या अन्य संकटों के समय व्यक्ति अकेला नहीं होता, बल्कि पूरा परिवार उसकी सहायता के लिए तत्पर रहता है। वृद्धजनों की देखभाल भी इसी व्यवस्था में सहज रूप से संभव होती है, जिससे उनके जीवन में सम्मान और सुरक्षा बनी रहती है। हालाँकि, इस व्यवस्था में कुछ सीमाएँ भी देखी जाती हैं, जैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव, निर्णयों में असहमति, पीढ़ियों के बीच मतभेद तथा महिलाओं की सीमित स्वायत्तता। इसके बावजूद, संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक संरचना का एक सशक्त और स्थायी आधार रहा है, जिसने समाज में स्थिरता, एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक भारतीय समाज में परिवार संस्था का स्वरूप एक गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है, जिसमें पारंपरिक संयुक्त परिवार और आधुनिक एकल परिवार के बीच एक मध्यवर्ती संरचना विकसित हो रही है। यह नया स्वरूप सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के अनुकूलन का परिणाम है, जिसमें परिवार अपनी मूल भावनात्मक एकता को बनाए रखते हुए संरचनात्मक रूप से परिवर्तित हो रहा है।

संशोधित संयुक्त परिवार इस परिवर्तन का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें परिवार के सदस्य भौगोलिक रूप से अलग–अलग स्थानों पर रहते हैं, किन्तु उनके बीच आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक संबंध पूर्ववत बने रहते हैं। इस प्रकार के परिवार में पारंपरिक संयुक्तता की भावना बनी रहती है, जैसे पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता, आर्थिक सहयोग, पारिवारिक आयोजनों में एकजुटता तथा संकट के समय परस्पर सहायता। यह स्वरूप आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं और पारंपरिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करता है।

इसी क्रम में ट्रांजिशनल परिवार (संक्रमणकालीन परिवार) की अवधारणा भी उभरकर सामने आती है, जो संयुक्त और एकल परिवार के बीच एक संक्रमण अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें परिवार के कुछ सदस्य अलग रह सकते हैं, जबकि अन्य सदस्य एक साथ निवास करते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से तब देखने को मिलती है जब रोजगार, शिक्षा या अन्य कारणों से परिवार के कुछ सदस्य शहरों में बस जाते हैं, जबकि मूल परिवार गाँव या पैतृक स्थान पर बना रहता है। इस प्रकार यह परिवार परिवर्तन की प्रक्रिया में एक मध्यवर्ती कड़ी के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, एकल लेकिन भावनात्मक रूप से संयुक्त परिवार का स्वरूप भी आधुनिक समाज में तेजी से विकसित हो रहा है। इस प्रकार के परिवार में पति–पत्नी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

और उनके बच्चे अलग निवास करते हैं, परंतु वे अपने मूल परिवार से भावनात्मक, सांस्कृतिक और कभी–कभी आर्थिक रूप से जुड़े रहते हैं। आधुनिक संचार माध्यमों जैसे मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इस प्रकार की पारिवारिक एकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस नए स्वरूप में पारिवारिक संबंधों की प्रकृति अधिक लचीली और वैकल्पिक हो गई है, जहाँ भौतिक दूरी के बावजूद भावनात्मक निकटता बनी रहती है। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि परिवार संस्था समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि वह समय की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को पुनर्गठित कर रही है। इस प्रकार आधुनिक परिवार एक मिश्रित संरचना के रूप में उभर रहा है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता दोनों के तत्व समाहित हैं, और जो बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। परिवार संस्था के बदलते स्वरूप विशेषकर संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण का समाज के विभिन्न आयामों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिसे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से समझा जा सकता है।

सामाजिक प्रभाव के संदर्भ में यह परिवर्तन व्यक्ति के समाजीकरण, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित करता है। संयुक्त परिवार में जहाँ बच्चों का समाजीकरण बहुआयामी होता था और वे विभिन्न आयु वर्गों के साथ रहकर सहयोग, सहनशीलता और सामूहिकता जैसे मूल्यों को सीखते थे, वहीं एकल परिवार में यह प्रक्रिया सीमित हो जाती है। इसके कारण बच्चों में व्यक्तिवाद और आत्मनिर्भरता तो बढ़ती है, लेकिन सामूहिक जीवन के अनुभव अपेक्षाकृत कम हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, एकल परिवारों के बढ़ने से वृद्धजनों की स्थिति भी प्रभावित हुई है, क्योंकि पारंपरिक देखभाल व्यवस्था कमजोर पड़ गई है, जिससे वृद्धाश्रमों की आवश्यकता और संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। साथ ही, पारिवारिक नियंत्रण में कमी के कारण सामाजिक अनुशासन और पारंपरिक मान्यताओं का प्रभाव भी घटता हुआ दिखाई देता है।

आर्थिक प्रभाव की दृष्टि से परिवार के स्वरूप में परिवर्तन ने संसाधनों के उपयोग, आय–व्यय के ढाँचे और आर्थिक सुरक्षा को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार में आय का सामूहिक प्रबंधन होता था, जिससे आर्थिक स्थिरता और सुरक्षा बनी रहती थी। किसी एक सदस्य के आर्थिक संकट में अन्य सदस्य सहयोग प्रदान करते थे, जिससे जोखिम का विभाजन हो जाता था। इसके विपरीत, एकल परिवार में आय के स्रोत सीमित होते हैं और आर्थिक दबाव अधिक महसूस होता है, विशेषकर मध्यम वर्गीय परिवारों में। हालांकि, एकल परिवारों में खर्चों पर नियंत्रण और वित्तीय निर्णय लेने की स्वतंत्रता अधिक होती है, जिससे आर्थिक प्रबंधन अधिक लचीला बनता है। साथ ही, महिलाओं की कार्यक्षेत्र में भागीदारी बढ़ने से परिवार की कुल आय में वृद्धि हुई है, जो आर्थिक सशक्तिकरण का संकेत है।

सांस्कृतिक प्रभाव के स्तर पर यह परिवर्तन परंपराओं, मूल्यों और जीवन–शैली को प्रभावित करता है। संयुक्त परिवारों में सांस्कृतिक परंपराओं, रीति–रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं का संरक्षण और पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण सहज रूप से होता था। त्योहारों, संस्कारों और पारिवारिक आयोजनों में सामूहिक सहभागिता से सांस्कृतिक एकता बनी रहती थी। इसके विपरीत, एकल परिवारों में इन परंपराओं का पालन सीमित हो गया है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता में कमी देखी जाती है। आधुनिकता, पाश्चात्य प्रभाव और उपभोक्तावादी जीवन–शैली ने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती दी है, जिसके परिणामस्वरूप जीवन–शैली अधिक

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

व्यक्तिगत और व्यावहारिक होती जा रही है। इस प्रकार, परिवार संस्था के बदलते स्वरूप ने समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने–बाने को गहराई से प्रभावित किया है। यह परिवर्तन जहाँ एक ओर आधुनिकता, स्वतंत्रता और लचीलापन प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों, सामूहिकता और सामाजिक सुरक्षा के समक्ष नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। परिवार संस्था के बदलते स्वरूप का अध्ययन वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि समाज में तीव्र गति से हो रहे आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तन सीधे पारिवारिक संरचना को प्रभावित कर रहे हैं। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति केवल एक संरचनात्मक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, मूल्य प्रणाली, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक सुरक्षा तंत्र को भी प्रभावित करती है। आधुनिक जीवनशैली, नगरीकरण, रोजगार के बदलते स्वरूप और वैश्वीकरण के प्रभावों ने पारंपरिक पारिवारिक ढाँचे को चुनौती दी है। ऐसे में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि यह परिवर्तन किस दिशा में जा रहा है, इसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम क्या हैं तथा यह समाज के भविष्य को किस प्रकार प्रभावित करेगा।

समस्या का स्वरूप बहुआयामी है और इसकी व्याख्या विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आयामों के संदर्भ में की जा सकती है। संयुक्त परिवार प्रणाली, जो कभी भारतीय समाज की आधारशिला मानी जाती थी, अब विघटित होती हुई प्रतीत होती है और उसकी जगह एकल परिवार ले रहा है। इस परिवर्तन के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरी, वृद्धजनों की उपेक्षा, बच्चों के समाजीकरण में बदलाव तथा सामाजिक सुरक्षा में कमी जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आ रही हैं। इसके साथ ही, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, गोपनीयता और आत्मनिर्भरता जैसे सकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। अतः यह समस्या केवल पारिवारिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तन का द्योतक है, जिसकी गहन व्याख्या आवश्यक है।

अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि परिवार समाज की मूल इकाई है और उसमें होने वाले परिवर्तन का प्रभाव सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था पर पड़ता है। वर्तमान समय में जब पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है, तब यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है। यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी है, ताकि वे परिवार संस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित कर सकें।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य परिवार संस्था के पारंपरिक एवं आधुनिक स्वरूप का विश्लेषण करना, संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे परिवर्तन के कारणों की पहचान करना, इस परिवर्तन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना तथा भविष्य में परिवार संस्था के संभावित स्वरूप को समझना है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार परिवार अपने बदलते स्वरूप में भी सामाजिक एकता और स्थिरता को बनाए रख सकता है।

शोध–प्रश्नों के माध्यम से इस अध्ययन की दिशा और गहराई निर्धारित की जाती है। इस संदर्भ में मुख्य शोध–प्रश्न यह हैं कि क्या संयुक्त परिवार वास्तव में समाप्त हो रहा है या उसका स्वरूप परिवर्तित

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

हो रहा है; एकल परिवार के बढ़ते प्रचलन के प्रमुख कारण क्या हैं; इस परिवर्तन का समाजीकरण, आर्थिक सुरक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है; तथा क्या आधुनिक परिवार पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम है। इन प्रश्नों के उत्तर इस शोध के माध्यम से खोजने का प्रयास किया गया है, जिससे परिवार संस्था के बदलते स्वरूप की समग्र समझ विकसित हो सके।

इस अध्ययन की परिधि परिवार संस्था के बदलते स्वरूप के समाजशास्त्रीय विश्लेषण तक सीमित है, जिसमें विशेष रूप से संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे परिवर्तन को केंद्र में रखा गया है। अध्ययन मुख्यतः भारतीय समाज के संदर्भ में किया गया है, जहाँ पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली ऐतिहासिक रूप से प्रमुख रही है और वर्तमान समय में उसमें परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। इसमें परिवार के संरचनात्मक, कार्यात्मक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पहलुओं का समग्र अध्ययन किया गया है।

अध्ययन में नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा का प्रसार, महिला सशक्तिकरण, वैश्वीकरण और आधुनिक जीवनशैली जैसे प्रमुख कारकों को शामिल किया गया है, जो परिवार के स्वरूप में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं। इसके साथ ही, परिवार के नए उभरते स्वरूपों जैसे संशोधित संयुक्त परिवार, संक्रमणकालीन परिवार तथा एकल लेकिन भावनात्मक रूप से जुड़े परिवार को भी अध्ययन के अंतर्गत लिया गया है।

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जैसे पुस्तकें, शोध–पत्र, जनगणना रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशित सामग्री। अतः इसमें प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण या प्राथमिक डेटा का सीमित उपयोग किया गया है। इसी कारण अध्ययन के निष्कर्ष व्यापक प्रवृत्तियों को दर्शाते हैं, न कि किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय की सूक्ष्म वास्तविकताओं को।

अध्ययन की एक प्रमुख सीमा यह है कि भारतीय समाज अत्यंत विविधतापूर्ण है, जिसमें क्षेत्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक आधार पर परिवार के स्वरूप में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इस विविधता के कारण सभी क्षेत्रों के लिए एक समान निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच भी पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण अंतर होता है, जिसे पूरी तरह समाहित करना इस अध्ययन के दायरे से बाहर है।

एक अन्य सीमा यह है कि परिवार संस्था एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें परिवर्तन निरंतर जारी रहते हैं। अतः इस अध्ययन में प्रस्तुत निष्कर्ष समय–विशेष की परिस्थितियों पर आधारित हैं और भविष्य में सामाजिक परिवर्तनों के साथ इनमें परिवर्तन संभव है। इसके बावजूद, यह अध्ययन परिवार संस्था के बदलते स्वरूप की व्यापक समझ प्रदान करता है और संयुक्त से एकल परिवार की ओर संक्रमण की प्रक्रिया को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होता है।

परिकल्पना– इस अध्ययन में परिवार संस्था के बदलते स्वरूप को समझने के लिए कुछ प्रमुख परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं, जो शोध की दिशा को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

1. भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली पूर्णतः समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि उसका स्वरूप परिवर्तित होकर संशोधित संयुक्त परिवार के रूप में विकसित हो रहा है। अर्थात् भौतिक रूप से अलग रहने के बावजूद पारिवारिक सदस्यों के बीच भावनात्मक, आर्थिक एवं सामाजिक संबंध बने रहते हैं।
2. नगरीकरण, औद्योगिकीकरण और रोजगार के अवसरों में वृद्धि संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण के प्रमुख कारण हैं। जैसे–जैसे लोग शिक्षा और रोजगार के लिए अपने मूल स्थानों से दूर जाते हैं, वैसे–वैसे परिवार का आकार छोटा होता जाता है और एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ती है।
3. शिक्षा के प्रसार और आधुनिक मूल्यों के विकास ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण युवा पीढ़ी स्वतंत्र जीवन–शैली को प्राथमिकता देती है और संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार को अधिक उपयुक्त मानती है।
4. महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक संरचना और भूमिकाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है, जिससे पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हुई है और एकल परिवार की प्रवृत्ति को बल मिला है।
5. एकल परिवारों के बढ़ने से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई है, किंतु इसके साथ ही सामाजिक सुरक्षा, वृद्धजनों की देखभाल तथा पारिवारिक सहयोग में कमी आई है।
6. परिवार संस्था के बदलते स्वरूप का बच्चों के समाजीकरण, सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और सामाजिक संबंधों की प्रकृति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, जिससे सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन देखने को मिलता है।

इन परिकल्पनाओं के माध्यम से यह अध्ययन यह जांचने का प्रयास करता है कि परिवार संस्था में हो रहे परिवर्तन के पीछे कौन–कौन से कारक कार्यरत हैं और उनके समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहे हैं।

शोध प्राविधि (Research Methodology)– प्रस्तुत अध्ययन परिवार संस्था के बदलते स्वरूप विशेषकर संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने हेतु एक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) प्रकृति का है, जिसमें सामाजिक तथ्यों, प्रवृत्तियों और विचारों का विश्लेषण किया गया है।

इस शोध में द्वितीयक स्रोतों का प्रमुख रूप से उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न समाजशास्त्रीय पुस्तकों, शोध–पत्रों, पत्रिकाओं, जनगणना रिपोर्टों, सरकारी प्रकाशनों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से सामग्री संकलित की गई है। इन स्रोतों के माध्यम से परिवार संस्था के पारंपरिक एवं आधुनिक स्वरूप, उनके बीच के अंतर तथा परिवर्तन के कारणों और प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध की पद्धति में तुलनात्मक (Comparative) दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत संयुक्त परिवार और एकल परिवार के बीच संरचनात्मक, कार्यात्मक तथा सांस्कृतिक भिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही ऐतिहासिक (Historical) पद्धति का भी सहारा लिया गया है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि समय के साथ परिवार संस्था में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है और किन सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों ने इस परिवर्तन को प्रभावित किया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

अध्ययन में व्याख्यात्मक (Analytical-Interpretative) पद्धति का भी प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से संकलित तथ्यों का विश्लेषण कर उनके पीछे निहित कारणों एवं परिणामों को समझने का प्रयास किया गया है। इस प्रक्रिया में विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांतों और अवधारणाओं का भी संदर्भ लिया गया है, जिससे अध्ययन को सैद्धांतिक आधार प्राप्त हो सके।

डेटा विश्लेषण मुख्यतः गुणात्मक तरीके से किया गया है, जिसमें विषय–वस्तु विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का वर्गीकरण, तुलना और व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त, कुछ सांख्यिकीय तथ्यों का उपयोग प्रवृत्तियों को स्पष्ट करने के लिए सहायक रूप में किया गया है।

अध्ययन की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए प्रयुक्त स्रोतों का सावधानीपूर्वक चयन किया गया है तथा विभिन्न दृष्टिकोणों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि यह शोध मुख्यतः द्वितीयक डेटा पर आधारित है, फिर भी इसका उद्देश्य परिवार संस्था के बदलते स्वरूप की एक समग्र एवं संतुलित समझ प्रस्तुत करना है।

इस प्रकार, प्रस्तुत शोध प्राविधि अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करती है और परिवार संस्था में हो रहे परिवर्तन के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होती है।

तथ्य–संकलन के स्रोत– प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य–संकलन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों के अंतर्गत समाजशास्त्र से संबंधित मानक पुस्तकों, शोध–पत्रों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, जनगणना रिपोर्टों, सरकारी प्रकाशनों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन सामग्री को सम्मिलित किया गया है। इन सभी स्रोतों से परिवार संस्था के पारंपरिक एवं आधुनिक स्वरूप, संयुक्त एवं एकल परिवार की विशेषताओं, तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रवृत्तियों से संबंधित तथ्य एकत्रित किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतों और अवधारणाओं को भी तथ्य–संकलन का आधार बनाया गया है, जिससे अध्ययन को सैद्धांतिक मजबूती प्राप्त हो सके। इस प्रकार, संकलित तथ्य व्यापक, विश्वसनीय और विषय के अनुरूप हैं, जो अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होते हैं।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)– परिवार संस्था के बदलते स्वरूप पर अनेक समाजशास्त्रियों और विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। विलियम जे. गुड (William J- Goode) ने औद्योगिकीकरण को परिवार संरचना में परिवर्तन का प्रमुख कारक माना और यह प्रतिपादित किया कि आधुनिक समाज में एकल परिवार अधिक उपयुक्त होता है। टाल्कट पार्सन्स (Talcott Parsons) ने भी यह तर्क दिया कि औद्योगिक समाज में एकल परिवार कार्यात्मक दृष्टि से अधिक प्रभावी होता है, क्योंकि यह गतिशीलता और अनुकूलन क्षमता को बढ़ाता है।

भारतीय संदर्भ में आई. पी. देसाई ने संयुक्त परिवार की अवधारणा का गहन अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि संयुक्तता केवल सह–निवास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक और भावनात्मक संबंधों पर आधारित होती है। एम. एन. श्रीनिवास ने सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए बताया कि नगरीकरण और शिक्षा ने पारंपरिक पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

इसके अतिरिक्त, योगेन्द्र सिंह ने भारतीय परंपरा के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए यह बताया कि आधुनिकता और परंपरा के बीच अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप परिवार के नए स्वरूप विकसित हो रहे हैं। इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि परिवार संस्था का परिवर्तन एक जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis)– इस अध्ययन में संकलित तथ्यों का विश्लेषण मुख्यतः गुणात्मक पद्धति के माध्यम से किया गया है। विषय–वस्तु विश्लेषण के द्वारा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को वर्गीकृत, तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संयुक्त परिवार और एकल परिवार के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है, जिससे उनके गुण, दोष और प्रभावों को समझा जा सके। इसके साथ ही, ऐतिहासिक विश्लेषण के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि समय के साथ परिवार संस्था में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है।

डेटा विश्लेषण के दौरान यह भी देखा गया कि आधुनिक समाज में परिवार का स्वरूप पूर्णतः एकल नहीं है, बल्कि उसमें संयुक्तता के कुछ तत्व अभी भी विद्यमान हैं। इस प्रकार, विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार एक गतिशील संस्था है, जो बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करती रहती है।

चर्चा (Discussion)– अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि परिवार संस्था में हो रहा परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण केवल आर्थिक या भौगोलिक कारणों से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से भी प्रभावित होता है।

चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक जीवनशैली, व्यक्तिवादी सोच और स्वतंत्रता की भावना ने एकल परिवार को बढ़ावा दिया है, जबकि पारंपरिक मूल्य और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता संयुक्त परिवार की प्रासंगिकता को बनाए रखती है। इस प्रकार, दोनों प्रकार के परिवारों के बीच एक संतुलन की स्थिति विकसित हो रही है।

इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया कि परिवार संस्था का यह परिवर्तन समाज में नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है, जैसे वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों का समाजीकरण और पारिवारिक मूल्यों का संरक्षण। अतः यह आवश्यक है कि इन चुनौतियों का समाधान सामाजिक एवं नीतिगत स्तर पर किया जाए।

परिणाम (Findings)– अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम सामने आए हैं–

- संयुक्त परिवार प्रणाली पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसका स्वरूप परिवर्तित होकर संशोधित रूप में विकसित हो रहा है।
- एकल परिवारों की वृद्धि का प्रमुख कारण नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा का प्रसार और रोजगार के अवसर हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

- आधुनिक समाज में व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता की भावना ने पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है।
- महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक भूमिकाओं और संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है।
- एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई है, किंतु सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक सहयोग में कमी आई है।
- बच्चों के समाजीकरण और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर परिवार के बदलते स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है।
- आधुनिक परिवार एक मिश्रित स्वरूप के रूप में विकसित हो रहा है, जिसमें संयुक्त और एकल दोनों के तत्व समाहित हैं।

इस प्रकार, अध्ययन यह दर्शाता है कि परिवार संस्था निरंतर परिवर्तनशील है और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार अपने स्वरूप को परिवर्तित करती रहती है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि परिवार संस्था का स्वरूप स्थिर न होकर निरंतर परिवर्तनशील है। भारतीय समाज में पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली, जो कभी सामाजिक संगठन की आधारशिला मानी जाती थी, आज विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति आधुनिकता, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा व्यक्तिवादी मूल्यों के विकास का परिणाम है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसने अपने स्वरूप को बदलकर आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल बना लिया है। संशोधित संयुक्त परिवार, संक्रमणकालीन परिवार तथा भावनात्मक रूप से जुड़े एकल परिवार इस परिवर्तन के उदाहरण हैं।

एकल परिवारों ने जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निर्णय–क्षमता और जीवन–शैली में लचीलापन प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक सुरक्षा, पारिवारिक सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता जैसी पारंपरिक विशेषताओं में कमी आई है। विशेष रूप से वृद्धजनों की स्थिति, बच्चों के समाजीकरण और पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण के संदर्भ में नई चुनौतियाँ सामने आई हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि परिवार संस्था समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को पुनर्गठित कर रही है। आधुनिक परिवार एक मिश्रित स्वरूप में विकसित हो रहा है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता दोनों का समन्वय देखा जा सकता है।

अनुशंसाएँ (Recommendations)–

1. वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं एवं देखभाल केंद्रों का विस्तार किया जाए।
2. पारिवारिक मूल्यों एवं संस्कारों के संरक्षण हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए।
3. कार्य–जीवन संतुलन सुनिश्चित करने के लिए सरकारी एवं निजी संस्थानों में अनुकूल नीतियाँ बनाई जाएँ।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

4. महिलाओं के कार्यक्षेत्र में भागीदारी को सहयोग देने हेतु डे–केयर सेंटर एवं लचीले कार्य समय की व्यवस्था की जाए।
5. परिवार परामर्श केंद्रों की स्थापना कर पारिवारिक विवादों के समाधान को प्रोत्साहित किया जाए।
6. बच्चों के समुचित समाजीकरण के लिए विद्यालयों एवं समुदाय स्तर पर सहायक कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
7. संयुक्त परिवार के सकारात्मक तत्वों जैसे सहयोग और सामूहिकता को आधुनिक परिवारों में भी प्रोत्साहित किया जाए।
8. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संतुलित विकास सुनिश्चित कर पलायन की प्रवृत्ति को नियंत्रित किया जाए।
9. डिजिटल माध्यमों के द्वारा पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने के प्रयास किए जाएँ।
10. सामाजिक नीति निर्माण में परिवार संस्था को केंद्र में रखकर योजनाएँ तैयार की जाएँ।

सन्दर्भ सूची–

1. Desai, I.P. (1964). Some Aspects of Family in Mahuva. Bombay: Asia Publishing House.
2. Shah, A.M. (1998). The Family in India: Critical Essays. New Delhi: Orient Longman.
3. Uberoi, Patricia (2006). Family, Kinship and Marriage in India. New Delhi: Oxford University Press.
4. Census of India (2011). Government of India.
5. Goode, William J. (1963). World Revolution and Family Patterns. New York: Free Press.
6. Ogburn, W.F. (1922). Social Change with Respect to Culture and Original Nature. New York: B.W. Huebsch.
7. Murdock, G.P. (1949). Social Structure. New York: Macmillan.
8. Parsons, Talcott (1955). Family, Socialization and Interaction Process. Glencoe: Free Press.
9. Srinivas, M.N. (1966). Social Change in Modern India. Berkeley: University of California Press.
10. Dube, S.C. (1990). Indian Society. New Delhi: National Book Trust.
11. Karve, Irawati (1965). Kinship Organization in India. Bombay: Asia Publishing House.
12. Kapadia, K.M. (1966). Marriage and Family in India. Bombay: Oxford University Press.
13. Ahuja, Ram (2001). Indian Social System. Jaipur: Rawat Publications.
14. Sharma, K.L. (2013). Indian Social Structure and Change. Jaipur: Rawat Publications.
15. Singh, Yogendra (1973). Modernization of Indian Tradition. Delhi: Thomson Press.